एमी का जन्मदिन

स्कूल से घर लौटते समय एमी अकसर धीरे-धीरे चलती थी और अपने आँखें धरती पर गड़ाये रखती थी, क्योंकि उसे कोई न कोई रोचक वस्तु ज़मीन पर पड़ी मिल ही जाती थी. एक बार उसे एक चाँदी का बटन मिला था, दूसरी बार एक सुंदर लाल पंख और फिर एक दिन एक सुलेमानी पत्थर. कुछ दिन पहले उसे एक चमकदार सिक्का मिला था, जिसके ऊपर लिंकन के बजाय एक इंडियन के चित्र बना था. उसके पिता ने कहा था कि उस सिक्के को खर्च न करे और संभाल कर अपने पास रख ले.

कभी-कभी चलते हुए वह ध्यान रखती थी कि घर पहुँचने तक उसका पाँव फुटपाथ की किसी दरार पर न पड़ जाए. बेंजी तमुरा ने, जो अगले घर में रहता था, एक दिन उसे कहा था, "अगर दरार पर पाँव रखा, माँ की पीठ को लगेगा झटका." एमी सच में माँ की पीठ को झटका नहीं देना चाहती थी.

लेकिन आज एमी थोड़ा जल्दी में थी. इसलिए धरती पर आँखें गड़ा कर चलने का उसके पास समय न था, चाहे गिरी हुई कोई रोचक वस्तु वह देख न पाती. आज शुक्रवार था और हर शुक्रवार को, घर आते समय, रास्ते में रुक कर वह मिसेज़ और मिस्टर वाडा से मिलती थी.

माँ ने कहा था कि वह दोनों वृद्ध थे और अकेले थे और हर सप्ताह उत्सुकता से उसके आने की प्रतीक्षा करते थे. इतना ही नहीं, एमी को उनके पास जाना अच्छा भी लगता था. मिसेज़ वाडा हमेशा उसके लिए कुछ न कुछ स्वादिष्ट बना कर रखती थी, कभी ताज़े कूकीज़, या केक या एक कप गर्म-गर्म कोको. मिस्टर वाडा अपने तालाब के पानी को खूब हिलाते थे ताकि एमी उनकी बड़ी चितकबरी कार्प देख सके.

आज मिसेज़ वाडा को एक अतिथि के विषय में बताने को एमी उतावली थी, जो अगले सप्ताह जापान से आकर उसके जन्मदिन का मज़ा किरकिरा करने वाले थे. उसकी बात सुनकर मिसेज़ वाडा हमदर्दी जताएंगी और च्-च्-च् करेंगी. और शायद उस अतिथि को लेकर उसे थोड़ा उत्साहित भी करेंगी. अभी तो निश्चय ही उसे कुछ अच्छा न लग रहा था.

एमी ने उनके घर के पिछले आँगन का चरमराता फाटक खोला. आँगन में एक कनवास कुर्सी पर बैठे मिस्टर वाडा उसे दिखाई दिए. उन्होंने अपनी आँखें ढक रखी थीं और ऊंघ रहे थे. सैल्यूलायड शेड के नीचे, झुर्रियों से भरा उनका चेहरा थोड़ा हरे रंग का दिख रहा था.

"हेलो ओजी-चान," एमी ने ज़ोर से कहा. उन्हें अपने को ओजी-चान अर्थात दादा जी कहलवाना अच्छा लगता था क्योंकि उनके अपने पोते-पोतियाँ नहीं थे.

मिस्टर वाडा थोड़ा हिले-डुले और एमी को देख कर मुस्कराये. "अहा, आखिर तुम हमें मिलने आ ही गयी," वह चिल्लाये, जैसे कि उनकी तरह वह भी ऊँचा सुनती थी.

एमी उनके उस कान के पास आई जिससे वह ठीक से सुन पाते थे और चिल्ला कर बोली, "पिछले शुक्रवार को भी मैं आई थी."

लेकिन मिस्टर वाडा ने उसकी बात की ओर ध्यान न दिया. "तो बताओ, क्या तालाब में रहने वाली मेरी पुराने दोस्त से तुम मिलना चाहोगी?" उन्होंने प्रसन्नता से पूछा. और उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना, कड़कड़ाते हुए वह उठे, और तालाब के मैले पानी को ज़ोर से हिलाने लगे. अगले पल एक विशाल चितकबरी कार्प मछली पानी से थोड़ा बाहर आई और उसने वृद्ध की ऊँगली को ऐसे काटा जैसे कि वह कोई स्वादिष्ट कीड़ा थी.

"हेलो दोस्त," मिस्टर वाडा ने बड़े प्यार से कार्प से कहा. "आज तुम कैसी हो? देखो हमें कौन मिलने आया है?"

"क्या आपको एक कुत्ता नहीं पालना चाहिये था, ओजी-चान?" एमी ने सब देखते हुए पूछा. एक कुत्ता कम से कम अपनी पूंछ हिलाएगा और उसका हाथ चाटेगा, उसने सोचा.

लेकिन वृद्ध ने अपना सिर हिलाया. "एक पालतू कार्प मछली से अच्छा कौन हो सकता है?" उन्होंने पूछा. "वह भोंकती नहीं है, वह मेरे बगीचे की घास को खोदती नहीं है, और उसे घुमाने भी नहीं ले जाना पड़ता. वह शान्ति से तालाब में रहती है और मुझे भी शांति से अपना जीवन से जीने देती है. जब भी मैं उसे देखना चाहता हूँ मैं पानी को बस थोड़ा हिला देता हूँ और वह झट से बाहर आ जाती है."

एमी को मानना पड़ा कि इस बात में तर्क तो था लेकिन अपने कुत्ते, वांको, के बदले दुनिया की सारी कार्प भी लेने को वह तैयार न थी. उसके घर में एक ही कार्प मछली थी एक कपड़े की कार्प जो 'लड़कों के दिन' (बोयज़ डे) एक खम्बे से बंधी नीले आकाश के नीचे हवा में लहराती थी. चूँकि वह लड़का नहीं थी, वह अपनी कार्प को पिता के लिए लहराते थे और गुड़ियों के त्यौहार वाले दिन उसकी माँ अपनी जापानी गुड़ियों के संग्रह को एमी के लिए सजाती थी.

मिस्टर वाडा को उनकी कार्प के पास छोड़ कर एमी मिसेज़ वाडा से मिलने घर के अंदर आई.

"ओबा-चान," उसने पुकारा. फिर वह प्रसन्नता से सूंघने लगी. बहुत ही अच्छी सुगंध घर में फैली हुई थी.

"एमी-चान, मुझे बहुत ख़ुशी है कि तुम आई," मिसेज़ वाडा ने ऐसे कहा जैसे कि उन्होंने वर्षों से उसे देखा न था. "तुम बिलकुल सही समय पर आई हो, स्पंज केक बस बन कर ही तैयार हुआ है."

उन्होंने केक का एक बड़ा टुकड़ा काटा और एक ग्लास दूध के साथ उसे मेज़ पर रख दिया. एमी बैठ गयी और केक का बड़ा निवाला काट कर खाने लगी, उसने इस बात की भी प्रतीक्षा न की कि मिसेज़ वाडा उसके स्कूल और माता-पिता के विषय में उससे कुछ पूछें.

"मेरे जन्मदिन का मज़ा किरकरा करने के लिये एक डरावने अतिथि हमारे घर आ रहे हैं," उसने निराशा से कहा. "वह एक पादरी हैं जो जापान से आ रहे हैं और पूरा सप्ताह हमारे साथ रहेंगे."

एमी को जापान से आने वाले पादरी बिलकुल अच्छे न लगते थे. वह सब विशिष्ट लोग बहुत ही नीरस थे और हंसी-मज़ाक उन्हें अच्छा न लगता था. उसके माता-पिता जापान से आकर कैलिफ़ोर्निया में बस गये थे. क्रिस्चियन यूनिवर्सिटी क्योटो में कार्यरत उनके मित्र अपने मित्रों को, और कभी-कभी मित्रों के मित्रों को, जब वह अमरीका घूमने आते थे, उनके यहाँ भेज देते थे. कभी-कभी यह मेहमान एक रात उनके साथ बिताते थी. कभी-कभी दो रातें उनके साथ रहते थे. लेकिन जो अतिथि अब आ रहे थे वह थे रेवरेंड ओकुरा और वह पूरा एक सप्ताह उनके साथ रहने वाले थे. इतना ही नहीं, वह ठीक उसके जन्मदिन पर आ रहे थे.

"तुम्हारे कहने का अर्थ है," मिसेज़ वाडा ने कहा, "कि वह ठीक उसी दिन आ रहे हैं जिस दिन तुम्हारा सातवाँ जन्मदिन है? मंगलवार को? चौदह नवम्बर को?"

उनके तीनों प्रश्नों के उत्तर में एमी ने तीन बार अपना सिर हिलाया. "इसलिये लगता मेरे जन्मदिन पर कोई पार्टी नहीं हो पाएगी."

"अरे, यह तो गलत बात है," मिसेज़ वाडा ने कहा और, जैसा कि एमी ने सोचा था, हमदर्दी में वह च्..च्..च् करने लगीं.

"वह मेरे जन्मदिन का कचड़ा कर देंगे, पूरे जन्मदिन का," एमी ने गुस्से से कहा.

मिसेज़ वाडा ने अपना सिर एक ओर झुकाया और सोचने लगी. "शायद वह ऐसा न करें," उन्होंने धीमे से कहा. "शायद वह बहुत अच्छे हों. शायद वह तुम्हें आश्चर्यचकित कर दें."

लेकिन एमी जानती थी कि अतिथि ऐसा नहीं करेंगे, और वह मिसेज़ वाडा के घर से चल पड़ी. जितनी निराश वह उनके घर आई थी उतनी ही निराश वह वहां से लौट रही थी, हालाँकि उसने ओबा-चान का बनाया स्पंज-केक खूब सारा खाया था.

"रखा, रखा, रखा .....दरार के ऊपर पाँव रखा रेवरेंड ओकुरा की पीठ को लगा झटका," एमी बोली और उसने एक पाँव सीधा दरार के ऊपर रख दिया.

लेकिन ऐसा करते ही उसे अपने पर शर्म आई. "मैं सच में ऐसा नहीं चाहती," उसने ज़ोर से उसे कहा जो कोई भी इस खेल का नियन्त्रण कर रहा था. फिर वह भागते हुए घर आ गयी.

अपने घर के प्रवेश द्वार की सीढ़ियों पर बैठा बेंजी उसकी प्रतीक्षा कर रहा था. वह पाँच वर्ष का था और आसपास के लड़के उसके साथ न खेलते थे क्योंकि अभी वह बहुत छोटा था. इसलिये वह एमी के साथ खेलता था यद्यपि कि वह एक लड़की थी.

"कंचे खेलोगी?" उसने पूछा.

एमी ने सिर हिला कर इंकार किया. वह भीतर जाकर माँ से पूछना चाहती थी कि क्या रेवरेंड ओकुरा सच में मंगलवार को आ रहे थे. क्या पता उनका निर्णय बदल गया हो? क्या पता वह अगले वर्ष आयें? क्या पता वह कभी आयें ही नहीं?

"हेलो, वांको," एमी ने अपने कुत्ते से कहा. "मेरी प्रतीक्षा करो. मैं थोड़ी देर में बाहर जाऊँगी."

वांको ने अपनी पूंछ हिलाई और बैठ कर उसकी प्रतीक्षा करने लगा.

"माँ," घर के भीतर आते ही एमी ने माँ को पुकारा. "क्या वह अभी भी आ रहे हैं?"

माँ एक बड़े सफ़ेद मेज़पोश को इस्त्री कर रही थीं. इसका अर्थ था कि वह मेहमान के स्वागत की तैयारी कर रही थीं.

"हेलो, एमी-चान," उन्होंने कहा और चूँकि वह जानती थी कि एमी किन के विषय में बात कर रही थी उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ, रेवरेंड ओकुरा निश्चय ही आ रहे हैं. ठीक इस समय उनका जहाज़ सागर के मध्य में हैं. मंगलवार को जहाज़ बंदरगाह पहुंचेगा."

"मेरा जन्मदिन," एमी बोली, जैसे की माँ जानती न थीं.

"हम एक बड़ा केक बनायेंगे और मीठे में आइस-क्रीम होगी," माँ ने कहा.

लेकिन यह वैसी विशेष पार्टी न होगी जैसी वह अपने मित्रों के संग हर वर्ष करती थी. अपने में दुःखी, एमी घर से बाहर आ गयी.

"बेंजी!" उसने बाड़ के ऊपर से चिल्ला कर पुकारा. "अब मैं तुम्हारे साथ कंचे खेलूंगी." लेकिन बेंजी जा चुका था और सिर्फ वांको वहां उसकी प्रतीक्षा में बैठा था.

एमी पिछली सीढ़ियों पर बैठ गयी. वह बहुत निराश थी.

"फूएय!" वह बोली.

वांको अपनी पूँछ हिलाने लगा और उसका हाथ चाटने लगा.

मंगलवार, 14 नवम्बर का दिन बहुत सुहावना था. सूर्य के प्रकाश में एमी का कमरा जगमगा रहा था.

"जन्मदिन की शुभकामनाएँ, एमी-चान!' माँ ने कहा. वह उसके लिए गुलाबी रंग की एक ड्रेस ले कर आई थीं जो उन्होंने एमी के लिए बनाई थी. उस ड्रेस को उन्होंने उसके बिस्तर पर बिछा दिया और उसे गले लगाया.

नाश्ते के समय पिता ने अख़बार रख दिया और उन्होंने भी एमी को गले लगाया. "जन्मदिन की शुभकामनाएँ, सात वर्षीय बालिके," वह बोले, और जब एमी को अपनी प्लेट के पास एक छोटा सा डिब्बा मिला तो वह उसे देख कर मुस्कराये. डिब्बे के अंदर सोने के एक पतली चेन से लटकता दिल के आकार का छोटा सा एक लॉकेट था. यह उसका जन्मदिन का उपहार था.

"ओह, माँ! पापा!" एमी बहुत प्रसन्न थी और अपनी प्रसन्नता को बता न पा रही थी.

“मिस्टर और मिसेज़ वाडा को भी तुम्हारे जन्मदिन के रात्रि-भोज पर मैंने निमंत्रण दिया है.” माँ ने कहा. “हम बढ़िया पार्टी करेगें.”

“पादरी के साथ भी?” एमी ने पूछा.

“अवश्य,” माँ ने उत्तर दिया.

“आज दुपहर उनका जहाज़ पहुँच जाएगा,” पिता ने कहा. “मैं दुपहर बाद की छुट्टी ले लूंगा. और शाम के समारोह के लिए समय से पहले ही पहुँच जायेंगे.”

सैन फ्रांसिस्को की बंदरगाह पर लोगों का स्वागत करने का पिता को बहुत अनुभव था क्योंकि जापान से आये कई मेहमानों को वह बंदरगाह से घर ले कर आये थे.

जब एमी स्कूल से घर आई तब माँ रात्रि-भोज की तैयारी कर रही थी. सारे घर में अच्छी सुगंध फैली हुई थी. जन्मदिन का जो केक माँ ने बनाया था उसकी सुगंध थी. जो मांस माँ ने भूना था उसकी सुगंध थी. बैठक के फर्नीचर की जो पोलिश माँ ने की थी उसकी सुगंध थी.

“हेलो, एमी,” माँ ने बुलाया. “क्या मेज़ सजाने में मेरी सहायता करोगी?”

एमी ने मेज़ को खींचने में माँ की सहायता की ताकि एक अतिरिक्त मेज़ लगाई जा सके. उन्होंने मिलकर मेज़ों पर एक बड़ी सफ़ेद चद्दर बिछा दी. फिर एमी ने चाँदी के बर्तन मेज़ पर सजाये और ग्लास और नैपकिन रखे. फिर माँ के कहने से पहले ही, फूलदान में रखने के लिए वह बाहर बगीचे से फूल तोड़ कर लाई. उसने पिता की फुलवारी से थोड़े से लाल गुलदाउदी के फूल भी तोड़े.

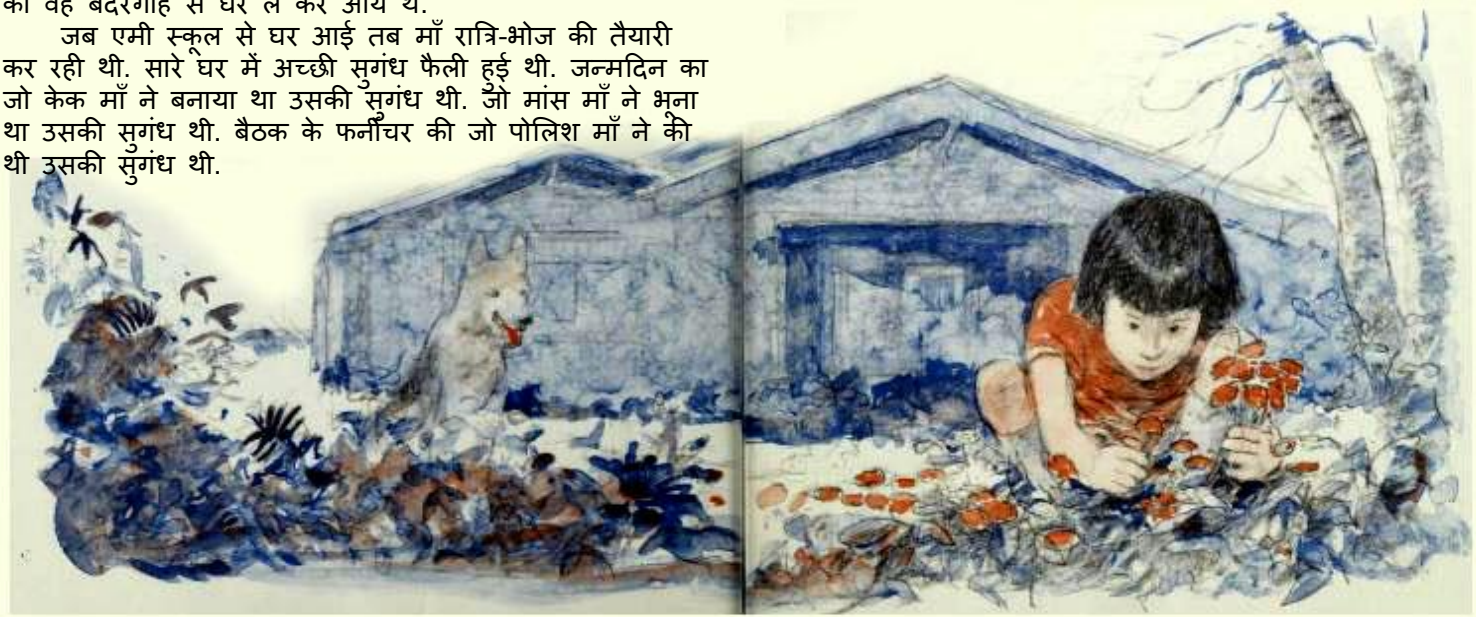

“क्या वह आ गये हैं?” यह बेंजी की आवाज़ थी, जो बाड़ के दूसरी ओर से चिल्ला रहा था.

“अभी नहीं,” एमी ने भी चिल्ला कर कहा. “मेरी नई ड्रेस देखना चाहते हो?”

लेकिन बेंजी को नई ड्रेस में कोई दिलचस्पी न थी. “मैं तो पादरी को देखना चाहता हूँ,” उसने उत्तर दिया.

“वह तो नीरस और उबाऊ ही होंगे,” एमी ने चिल्ला कर कहा और गुलदाउदी के फूलों को माँ के चीनी मिटटी के बने दूधिया हंस की खाली पीठ में सजाने के लिए भीतर आ गयी.

जिस समय मिस्टर और मिसेज़ वाडा उनके घर आये, उसी समय एमी के पिता भी रेवरेंड ओकुरा के साथ आ पहुंचे. इस कारण द्वार-मंडप पर बहुत देर तक अभिवादन हुआ, नमन हुआ और बातें हुईं

मिसेज़ वाडा ने एमी का आलिंगन किया और उसकी नई गुलाबी ड्रेस और सोने के लॉकेट की प्रशंसा की. मिस्टर वाडा अपना सबसे बढ़िया सूट पहन कर आये थे. उन्होंने एमी को उसका जन्मदिन का उपहार दिया. यह था, स्विट्ज़रलैंड में बना, नक्काशी किया हुआ म्युज़िक बॉक्स.

“आप हैं रेवरेंड ओकुरा,” पिता ने माँ और एमी से कहा.

माँ ने झुक कर उनका अभिवादन किया और कहा की उनसे मिल कर वह बहुत प्रसन्न थी. लेकिन एमी को लगा कि पिता किसी गलत व्यक्ति को ले आये थे. रेवरेंड ओकुरा नीरस व्यक्ति नहीं लग रहे थे और न ही वह बहुत विशिष्ट दिखाई दे रहे थे. वह थोड़ा अस्त-व्यस्त थे जैसे की वह अभी-अभी बेसबॉल खेल कर आये हों. उनके बाल काले, घने और घुंघराले थे, उनकी मुस्कान प्यार भरी थी. उन्होंने एमी का हाथ इतने ज़ोर से दबाया कि उसे लगा उसके हाथ की हड्डियाँ चरमरा गयी थीं. पहली बात जो उन्होंने कही वह थी, “मेरी एक बेटी है, तुम्हारे ही जैसी.”

एमी ने जो पहली बात कही वह थी, “आप एक पादरी जैसे बिलकुल नहीं लगते.”

उसी समय बेंजी भागता हुआ भीतर आ गया. “देखो मुझे क्या मिला,” उसने चिल्ला कर कहा. उसके हाथ में एक चिड़िया का एक मरा हुआ, छोटा बच्चा था जिसकी अकड़ी हुई टाँगे ऊपर की ओर उठी हुई थीं.

“बेचारा नन्हाँ पँक्षी,” माँ ने कहा. “यह अपने घोंसले से गिर गया होगा.”

“ऐसा ही हुआ होगा,” पापा और मिस्टर वाडा सहमत थे.

मिसेज़ वाडा ने बेंजी के हाथ में रखे रोयेंदार बॉल को देख कर हमदर्दी में ‘च्...च्...च्’ कहा

“मैं इसका क्या करूं? बेंजी ने पूछा.

“इसे हमारे आड़ के पेड़ के नीचे दबा दो और इसका अंतिम संस्कार करो,” एमी ने उत्तर दिया.

तब रेवरेंड ओकुरा ने कहा, “अंतिम संस्कार करने में मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ.” क्योंकि वह जानते थे कि उनकी अपनी बेटी भी ऐसा ही चाहती.

और एमी भी यही चाहती थी. जब उसने अपनी गोल्डफिश को ज़मीन में दफनाया था तब उसने भी अंतिम संस्कार किया था, यद्यपि उसकी सहायता करने के लिए कोई पादरी वहाँ नहीं था. लेकिन आज एक पादरी यहाँ थे जो जापान से आये थे और वह पक्षी का अंतिम संस्कार करने के लिए तैयार थे.

“पिछले आँगन में चलते हैं ,” एमी ने कहा और आगे-आगे चलने लगी. सब उसके पीछे-पीछे आने लगे. सब, सिवाए माँ के, जो भूने हुए गोश्त को देखने के लिए घर के भीतर चली गयी थीं, और पिता के, जो स्टोर से आइस-क्रीम लेने के लिए चले गये थे.

एमी और बेंजी ने आड़ के पेड़ के नीचे एक गड्ढा खोदा. फिर उन्होंने उस पक्षी को अंजीर के पत्ते में लपेट कर उस गड्ढे में रख दिया और उसके पर मिट्टी और पत्थर रख दिये. मिसेज़ वाडा ने पिता के गुलदाउदी के पौधे से एक फूल तोड़ उन पत्थरों के ऊपर रख दिया.

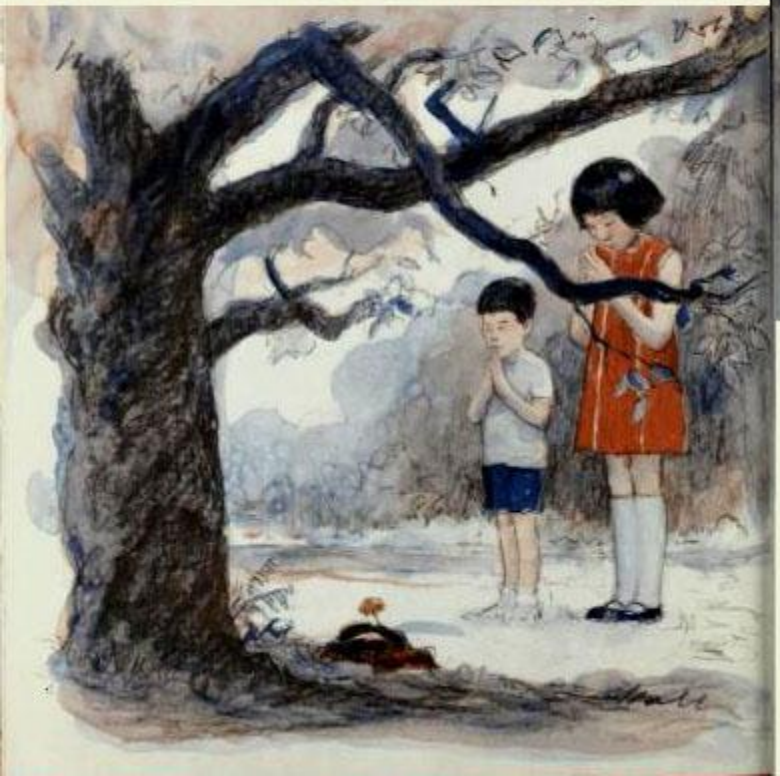

फिर रेवरेंड ओकुरा ने अपने हाथ जोड़ लिए. “प्रभु,” वह बोले, “हम जानते हैं कि एक छोटी सी चिड़िया पर भी आपकी कृपा-दृष्टि रहती है. इस नन्हे जीव को हम आपकी शरण में भेज रहे हैं इस पर कृपा करें.’

“स-स्नेह आपका, बेंजी,” बेंजी ने कहा जैसे कि वह कोई पत्र लिख रहा था.

एमी ने अपनी कोहनी से उसे छुआ. “बोलो, आमीन,” उसने धीमे से कहा.

बेंजी यह बातें नहीं जानता, एमी ने सोचा, क्यों की वह रविवार स्कूल नहीं जाता था.

“आमीन,” बेंजी ने कहा.

फिर रेवरेंड ओकुरा गाने लगे. उन्होंने अपनी मधुर आवाज़ में एक जापानी भजन गाया. जब वह दूसरा छंद गाने लगे तब मिस्टर और मिसेज़ वाडा भी उनका साथ देने लगे.

जितने भी अंतिम संस्कारों में एमी ने भाग लिया था उन में से यह सबसे अच्छा था. और अब उसके मन में जापान के रेवरेंड ओकुरा के लिए श्रद्धा पनपने लगी थी.

चूँकि बेंजी वहीं था, माँ ने एमी से कहा कि उसके लिए भी मेज़ पर प्लेट लगा दे. उन्होंने बेंजी की माँ को फोन कर के बताया कि वह एमी के जन्मदिन पर रात्रिभोज उनके साथ ही करेगा.

बेंजी को यह बात अच्छी लगी. उसके मन में भी पादरी के लिए आदर का भाव था क्योंकि उन्होंने उसके पक्षी का इतना अच्छा अंतिम संस्कार किया था.

डिनर समाप्त हो गया. मिस्टर वाडा ने चिल्ला कर कहा कि उन्हें विश्वास था कि इतना स्वादिष्ट भुना हुआ गोश्त उन्होंने अमरीका में पहली बार खाया था. मिसेज़ वाडा ने शैारबे की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह रेशम जैसा मुलायम था.

लेकिन एमी को तो मीठा सबसे अच्छा लगा था क्योंकि जो केक माँ ने बनाया था वह तीन तह वाला था जिस पर चॉकलेट की फ्रोस्टिंग थी, सात लाल रंग की मोमबत्तियां लगी थीं और उस पर सफ़ेद आइस में लिखा था, एमी जन्मदिन की शुभकामनाएँ.

जब उसने केक देखा और सब को 'जन्मदिन की शुभकामनायें' गाते सुना तो वह भूल गयी कि वह मित्रों के संग अपनी विशेष पार्टी न कर पाई थी. आखिरकार, यह पार्टी भी तो विशेष पार्टी बनती जा रही थी.

जब मिसेज़ वाडा ने अपना नैपकिन गलती से नीचे गिरा दिया तो एमी उसे उठाने के लिए मेज़ के नीचे रेंग कर आ गयी. तब उसने जुराबे में ढके दो बड़े पाँव देखे जो उसके नाक के पास टेढ़े-मेढ़े हिल रहे थे. यह पाँव पिता या मिस्टर वाडा के नहीं थे, यह पाँव रेवरेंड ओकुरा के थे.

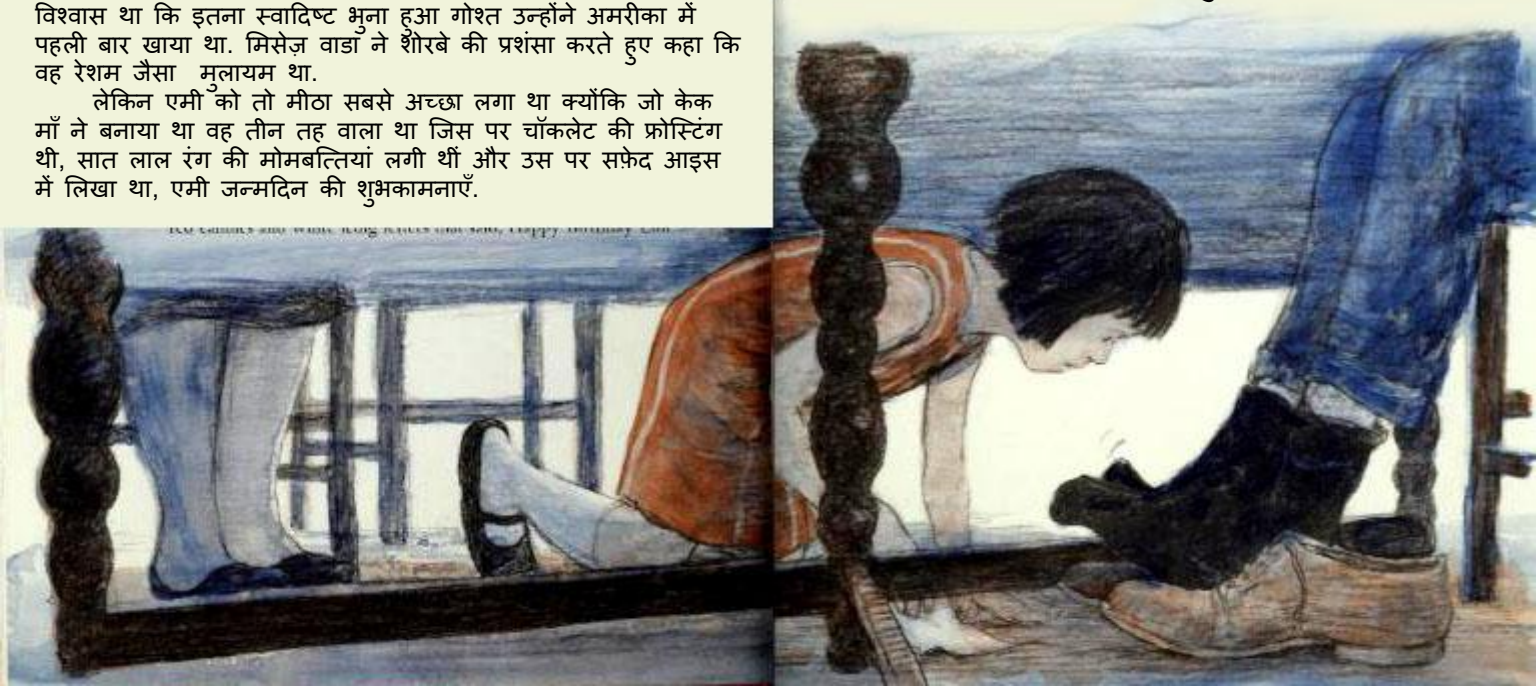

एमी झटपट अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गई. उसने रेवरेंड ओकुरा की ओर देखा और सोचने लगी कि वह कैसे इतने शांत बैठ पा रहे थे जबकि मेज़ के नीचे उन्होंने अपने जूते उतार रखे थे और पंजों को टेढ़े-मेढ़े हिला रहे थे. एमी दाँत निकालने लगी और रेवरेंड ओकुरा समझ गये कि वह क्यों हंस रही थी. वह थोड़ा मुस्कराये और एमी को आँख से इशारा किया. एमी भी उन्हें आँख मारना चाहती थी लेकिन उसे आता नहीं थी. उसके स्थान पर उसने बेंजी के सामने से, मेज़ के दूसरी ओर, नमकीन बादामों का बाउल उनकी ओर बढ़ाया.

"लीजिये, रेवरेंड ओकुरा," उसने शान से कहा. "यह बहुत अच्छे हैं."

रात्रिभोज की समाप्ति पर सब पियानो के आस-पास बैठ गये. माँ ने पियानो एक गीत बजाया जिसका नाम था, 'हंसों वाली नदी,' पिता और मिसेज़ वाडा ने मिलकर एक गीत गाया, जैसे वह चर्च में गाते थे. फिर जापान के लोक संगीत की लय पर रेवरेंड ओकुरा ने बाइबिल से कुछ भजन गाये. यह इतना मनोरंजक था कि मिस्टर वाडा बड़े प्रयास से ही ज़ोर-ज़ोर के ठहाके लगाने से अपने को रोक पाए.

एमी को लगा कि माँ और पिता के जितने भी अतिथि जापान से आये थे उनमें से रेवरेंड ओकुरा ही सबसे विनोदी थे. वास्तव में वह उन्हें पसंद करने लगी थी.

ठीक साढ़े आठ बजे मिस्टर वाडा का सिर धीरे-धीरे हिलने लगा.

"ओजी-चान को नींद आ रही है," मिसेज़ वाडा ने कहा. "उनके सोने का समय हो चुका है."

बेंजी भी, एक थकी हुई तितली के पंखों समान, अपनी पलकें झपका रहा था.

"क्या मैंने तुम से कहा नहीं था कि शायद वह अच्छे हों?" अपना कोट पहनते हुए मिसेज़ वाडा ने फुसफुसा कर एमी से कहा.

एमी ने धीरे से अपना सिर हिलाया. मिसेज़ वाडा सही थीं.

"तो आखिर तुम्हारे जन्मदिन का मज़ा किरकिरा तो नहीं हुआ."

एमी ने सिर हिला कर हामी भरी. वास्तव में तो यह सबसे अच्छा जन्मदिन था.

घर जाने से पहले बेंजी को बताना पड़ा कि एमी के जन्मदिन पर उसे सबसे अच्छा क्या लगा था. "मुझे आइस क्रीम और केक सबसे अच्छे लगे," उसने एमी से कहा. फिर जैसे वह दरवाज़े के निकट पहुंचा उसने कहा, "लेकिन अंतिम संस्कार सबसे अच्छा था."

"अवश्य था," एमी ने कहा. "सब कुछ अच्छा था, सब कुछ."

"मुझे प्रसन्नता है," माँ ने एमी को बाहों में भरते हुए कहा. "मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हारे जन्मदिन का आयोजन इतना अच्छा हुआ."

पिता बेंजी को उसके घर छोड़ कर आये. फिर मिस्टर और मिसेज़ वाडा को अपनी कार में बिठा कर उन्हें उनके घर छोड़ने चल दिये. "मैं शीघ्र लौट आऊंगा," गाड़ी चालू करने से पहले उन्होंने कहा.

जन्मदिन की पार्टी से मेहमानों का वापस जाना एमी को अच्छा न लगता था. उसे लगता था कि उनके जाने के साथ उसका जन्मदिन थोड़ा-थोड़ा समाप्त हो रहा था. आज रात जब उन्होंने द्वार बंद किया तो उसे इस बात की प्रसन्नता थी कि रेवरेंड ओकुरा अभी भी अंदर बैठे थे. उन्होंने फिर से अपने जूते उतार दिए थे और अपने पाँव के पंजों को हिला-डुला रहे थे.

"अमरीका में मेरे पहले दिन ही कितनी बढ़िया पार्टी हुई," वह बोले, वह पूरी तरह संतुष्ट दिखाई दे रहे थे. उनके पाँव भी प्रसन्न लग रहे थे.

“मुझे ख़ुशी है कि आप कुछ दिन हमारे साथ रहेंगे,” माँ ने कहा.

“मुझे भी,” एमी बोली, और वह सत्य कह रही थी.

फिर वह भी रेवरेंड ओकुरा के पास सोफ़े पर बैठ गई. उसने अपने जूते उतार फैंके और अपने जन्मदिन की ख़ुशी को अपने पाँव तक फैलने दिया.

समाप्त